प्रिय अभ्यार्थी,

→ आपकी कॉपी के कंटेंट की समझ है पर उत्तर की माँग का भी विशेष ध्यान रखें।

→ 'कवितावली' के प्रश्नों में कवितावली से सम्बन्धित उदाहरणों का ही प्रयोग करें।

→ प्रश्न की माँग के अनुसार ही उत्तर की संरचना रखें।

All the Best

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- २० | Do not write anything here

② गोस्वामी तुलसीदास रचित 'कवितावली' के उत्तरकाण्ड की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

तुलसीदास की सर्वश्रेष्ठ कृति "कवितावली" मे भाषा के स्तर पर रूप तथा शिल्प का सुंदर संतुलन विद्यमान है। तुलसी की काव्यभाषा साहित्यकारों के बीच मानी जाती रही है।

तुलसी ने काव्य मे जनबोधी भाषा का प्रयुक्त किया है ताकि उसका प्रभाव सर्वव्यापी हो सके। तुलसी संस्कृत के ज्ञाता है फिर भी उनके द्वारा लोक भाषा का चयन किया गया।

"भाषा बद्ध करबि मैं सोई। मोरे मन प्रबोध जेहि होई।"

सटीक भूमिका से शुरुआत हो

कवितावली की भाषा शैली के विशेष संदर्भ मे लिखें।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मत से भी शुरुआत कर सकते हो।

Email- ravisahu9770@gmail.com

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- | Do not write anything here

इसके अतिरिक्त उनके द्वारा लोकभाषा तथा संस्कृत के मध्य समन्वय पर बल दिया गया।

" का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिए साँच, काम जु आवै कामरी का लै करिय कुमाच।"

तुलसी के काव्य मे समस्त शब्दों का समावेश है चाहे वह तत्सम, तद्भव हो या विदेशज। हालांकि तद्भव का अनुपात अधिक है -

तत्सम - प्रबोध, जीविका।

तद्भव - पर्व, अहेर, सायर

विदेशज - मसित, गरिबेनवाज

तुलसी अवधी तथा

कवितावली से जोड़कर लिखें

अनावश्यक विवरण प्रस्तुत है।

Page no. | Email- ravisahu9770@gmail.com

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- | Do not write anything here

ब्रज भाषा मे भी सिद्धहस्त है जिनमे उन्होंने बहुत सी काव्य की रचना की है।

अवधी - कवितावली, गीतावली

ब्रज - रामचरितमानस, जानकीमंगल

कवितावली की भाषा ब्रजभाषा है।

रामचरितमानस की भाषा अवधी है।

मुहावरो तथा कहावतों का प्रयोग भाषा मे लोक प्रभाव क्षमता को बढ़ाती है।

"धूत कहौ अवधूत कहौ राजपूत कहौ जोलाहा कहौ कोऊ ××××
लैबो एकु न दैबे को दोऊ"

उपर्युक्त के अतिरिक्त संज्ञा से क्रिया तथा क्रिया से संज्ञा शब्द निर्माण मे भी वे सिद्धहस्त है।

पीड़ा - पीडहि, लूट - लूटक

Email- ravisahu9770@gmail.c

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- | Do not write anything here

तथापि तुलसी की भाषा क्षमता का सबसे महत्वपूर्ण पहलू उनकी ध्वन्यात्मकता है, जिसके कारण रामविलास शर्मा ने ध्वनि की तरंग उठाने में उनकी अद्वितीय की प्रशंसा की है।

" सिथिल अंग पग मग डग डोलहिं
बिह्वल बचन पेम बस बोलहिं "

उपर्युक्त भाषा कौशल के ध्वनि के आधार पर उनकी प्रभावशीलता अधिक है परंतु उन्होंने स्वयं को काव्यशास्त्र संबंधी अज्ञानी होने का प्रमाण कुछ - कुछ स्पष्ट कर दिया है।

" कवि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू
सकल कला सब बिद्या हीनू "

विवरण को कवितावली से जोड़कर लिखें

2.5
20

Email- ravisahu9770@gm

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- 15

(a) गोस्वामी तुलसीदास रचित 'कवितावली' के उत्तरकांड के आधार पर उनकी भक्ति भावना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

तुलसीदास राम भक्ति काव्यधारा के प्रतिष्ठित के कवि है, जिसमे उनकी भक्ति का स्वरूप मे विविधता प्रदर्शित है।

सर्वप्रथम तुलसी नवधा भक्ति के समर्थक है जिसमे वह दास्य भक्ति को स्वीकारते है। जिसमे ईश्वर सर्वश्रेष्ठ व सर्वशक्तिमान माना जाता है तथा भक्त मे लघुता का भाव होता है।

"राम सो बड़ो है कौन, मोसो कौन छोटो, राम सो खरो है कौन मोसो कौन खोटो"

भूमिका को कवितावली से जोड़कर लिखें।

कवितावली नाम से जोड़े

उदाहरण ठीक है

Email- ravisahu9770@gmail.com

U.P.S.C.

Que.no | Name- Ravi kumar | Marks- | Do not write anything here

श्रवण को भी दास्य भक्ति के अनुकूल माना है-

"जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना, श्रवण रंध्र अहिभवन समाना"

तुलसीदास के समय सगुण व निर्गुण भक्ति के समर्थक विवाद था। तुलसी सगुण भक्त है। कबीर ने जोर देकर कहा था की लोग "दशरथ पुत्र" को पूजते है और "राम" शब्द के वास्तविक मर्म को नहीं समझते।

तथापि तुलसी ने सगुण व निर्गुण मे समन्वय पर जोर दिया है

"अगुनहिं - सगुनहिं नही कुछ भेदा, गावहि मुनि पुरान बुध वेदा"

इसके अतिरिक्त तुलसी ने

कवितावली के उद्धरणों का प्रयोग करें।

रामचरितमानस के उद्धरण प्रयोगों से बचें।

Email- ravisahu9770@gmail.com

U.P.S.C.

Que.no Name- Ravi kumar Marks-

Do not write anything here

अवतारवाद को भी प्रदर्शित किया है।

" तन - तन धरि प्रभु विविध सरीरा "

इसके साथ ही तुलसी निष्काम भक्ति का भी समर्थन करते है जिसमे ईश्वर की भक्ति को ही साध्य माना जाता है।

अनावश्यक

तुलसी मूलत: राम के भक्त है परंतु अपनी समन्वय साधना मे अन्य देवो की भी पूजा करते है। ग्रंथो की शुरुआत गणेश वंदना से।

अनावश्यक

द्विवेदी का स्पष्ट मत है कि तुलसी स्वदेशी भक्ति के समर्थक है जो लोकोन्मुखता को शामिल करते है।

विरोध

" गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग।"

उपर्युक्त दृष्टिकोण से तुलसी की भक्ति स्वदेशी है तथा वे ईश्वर मे गुणो मे शील को सर्वाधिक महत्व देते है।

2/15

Page no.

Email- ravisahu9770@gmail.com